Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-1 (Jan.-June) 2025 : Page No.-209-213

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

**ISSN : 3048-9296 (Online)**
**3049-2890 (Print)**
**IIFS Impact Factor-2.0**
Vol.-2; issue-1 (Jan.-June) 2025
Page No- 209-213
**DOI : 10.71037/Shodhaamrit.v2i1.26**
©2025 Shodhaamrit
www.shodhaamrit.gyanvividha.com

**Hanuman**
Gujarat University, Ahmadabad.

Corresponding Author :
**Hanuman**
Gujarat University, Ahmadabad.

# समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य में शहर, स्मृति और प्रवासी संवेदना

**सारांश :** यह शोध-पत्र समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य में शहर, स्मृति और प्रवासी संवेदना के परस्पर संबंधों का साहित्यिक-सामाजिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यहाँ शहर को केवल भौगोलिक पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि सत्ता, बाज़ार, इतिहास, हिंसा, अवसर, अकेलेपन और आत्म-पुनर्निर्माण के जटिल स्थल के रूप में पढ़ा गया है। स्मृति को इस अध्ययन में नॉस्टेल्जिया के रूप में नहीं, बल्कि मनुष्य की आत्म-चेतना, सामाजिक अवशेषों और ऐतिहासिक प्रतिरोध की सक्रिय शक्ति के रूप में समझा गया है; वहीं प्रवासी संवेदना को बाह्य प्रवास के साथ-साथ आंतरिक विस्थापन, महानगरीय अजनबीयत, श्रमजीवी असुरक्षा और सांस्कृतिक बेदखली तक विस्तृत किया गया है। गीतांजलि श्री, उदय प्रकाश, अलका सरावगी, चित्रा मुद्गल और अखिलेश की कृतियाँ यह सिद्ध करती हैं कि समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य में शहर एक जीवित चरित्र है, स्मृति उसका भीतरी समय है, और प्रवास उसकी नैतिक बेचैनी। अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि समकालीन कथा-लेखन ने शहर को आधुनिकता के उत्सव की जगह उसके अंतर्विरोधों के दस्तावेज़ के रूप में रचा है; स्मृति को पुनरावर्तन नहीं, आलोचनात्मक पुनर्दृष्टि बनाया है; और प्रवासी संवेदना को मनुष्य की सभ्यतागत असुरक्षा का केन्द्रीय अनुभव बना दिया है।

**मुख्य शब्द :** शहर, स्मृति, प्रवासी संवेदना, विस्थापन, महानगर, समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य, बाज़ार, आंतरिक निर्वासन।

**1. परिचय :** समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य का बड़ा हिस्सा उस भारत को दर्ज करता है जो गाँव से शहर, कस्बे से महानगर, स्थानीयता से बाज़ार और इतिहास से तात्कालिकता की ओर बढ़ते हुए निरंतर बदल रहा है। यह परिवर्तन केवल स्थान का नहीं, संवेदना का भी है। इसीलिए हिन्दी आलोचना में नगरीकरण और हिंदी उपन्यास जैसे शोध-प्रबंध से लेकर प्रवासी हिंदी कहानी लेखन तक, शहर और प्रवास को गंभीर अध्ययन-विषय बनाया गया है; इसी क्रम में उदय प्रकाश, गीतांजलि श्री और अन्य कथाकारों पर हुए शोध भी यह दिखाते हैं कि समकालीन कथा-लेखन में महानगर, विस्थापन और व्यक्तित्व-संकट एक-दूसरे से

गहरे जुड़े हुए प्रश्न हैं (गोस्वामी, 1979; राठी, 2018; ज्योति, 2015).

यहाँ विचारणीय है कि शहर हिन्दी कथा-साहित्य में केवल उन्नति, गति और आधुनिकता का प्रतीक नहीं है। वह भय, विभाजन, बाज़ारवाद, मीडिया-नियंत्रण, वर्गीय हिंसा और सांस्कृतिक क्षरण का भी स्थल है। हमारा शहर उस बरस में शहर साम्प्रदायिक तनाव का शरीर बन जाता है; पीली छतरी वाली लड़की में विश्वविद्यालय और छात्रावास से लेकर पूँजी की अदृश्य संरचना तक, सब शहर के भीतर सक्रिय हैं; कलिकथा : वाया बाइपास में कोलकाता स्मृति, व्यापार, प्रवास और इतिहास का मिला-जुला पाठ है; आवाँ में मुंबई श्रम, देह, राजनीति और स्त्री-अस्तित्व का भीषण नगर है; और निर्वासन में शहर के भीतर भी एक गहरा भीतर-ही-भीतर होता निर्वासन दर्ज है (गीतांजलि श्री, 2022; उदय प्रकाश, 2014; अलका सरावगी, 1998; चित्रा मुद्गल, 1999; अखिलेश, 2014).
इस शोध-पत्र का मूल आग्रह यह है कि समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य में शहर, स्मृति और प्रवासी संवेदना को अलग-अलग नहीं पढ़ा जा सकता। शहर स्मृति को चोट पहुँचाता भी है और उसे सक्रिय भी करता है; स्मृति प्रवासी संवेदना को भाषा देती है; और प्रवास शहर को केवल बाहरी नहीं, भीतर का अनुभव बना देता है। फलतः कथा-साहित्य में जो शहरी दृश्य उपस्थित होता है, वह असल में मनुष्य की पहचान, संबंधों और नैतिकता का संकट-दृश्य है (भावना, 2021; एजाज़ुल हक, 2022).

**2. सैद्धान्तिक ढाँचा और शोध-विधि :** इस अध्ययन का सैद्धान्तिक आधार दो स्तरों पर निर्मित है। पहला, कथा-पाठ की निकट-पाठ पद्धति, जिसके बारे में नामवर सिंह ने कहानी : नयी कहानी को "एक व्यापक समीक्षा-पद्धति" की दिशा में प्रयत्नशील माना है; दूसरा, साहित्य के समाजशास्त्रीय पाठ की वह दृष्टि, जिस पर मैनेजर पाण्डेय ने बल दिया और जिसके अनुसार रचना को उसके सामाजिक यथार्थ और संरचनात्मक संबंधों के बीच पढ़ना आवश्यक है। स्मृति के प्रश्न पर निर्मल वर्मा की पुस्तक शब्द और स्मृति भी इस अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि उसमें स्मरण का अर्थ केवल अतीत-संसर्ग नहीं, "अपने आप तक लौटने की प्रक्रिया" के रूप में उभरता है (नामवर सिंह, 2016; मैनेजर पाण्डेय, 2014; निर्मल वर्मा, 2024).

शोध-विधि के रूप में इस पत्र में चयनित प्राथमिक ग्रंथों गीतांजलि श्री की माई और हमारा शहर उस बरस, उदय प्रकाश की पीली छतरी वाली लड़की, अलका सरावगी की कलिकथा : वाया बाइपास, चित्रा मुद्गल की आवाँ और अखिलेश की निर्वासन का व्याख्यात्मक-पाठ किया गया है। साथ ही, शोधगंगा में उपलब्ध प्रासंगिक शोध-प्रबंधों, समकालीन हिन्दी शोध-आलेखों और पुस्तकालय-अभिलेखों की सहायता से इन कृतियों के आलोचनात्मक प्रसंग को भी समझा गया है। इस पद्धति का उद्देश्य कथानक का सारांश देना नहीं, बल्कि यह देखना है कि चुनी हुई रचनाएँ शहर को कैसे रूपायित करती हैं, स्मृति को कैसे संरचित करती हैं और प्रवास को कैसे अनुभूतिमूलक अर्थ देती हैं (ज्योति, 2015; राठी, 2018; गोस्वामी, 1979; बलराम, 2004).

**3. चर्चा एवं विश्लेषण**

**शहर और स्मृति :** गीतांजलि श्री के हमारा शहर उस बरस में शहर का चेहरा असाधारण रूप से बहुस्तरीय है। उपन्यास का नगर किसी एक समुदाय का नहीं, बल्कि भय, अफ़वाह, स्मृति और राजनीतिक उकसावे से बना हुआ सामूहिक मानस है। जब टी.वी. पर धार्मिक-राजनीतिक भाषा की उग्रता सुनाई देती है। "आज हमारे देश की राजनीति हमारा अपमान कर रही है" तो यह वाक्य केवल भाषण नहीं रहता; वह शहर की नसों में उतरती हुई नफ़रत का सांकेतिक सूत्र बन जाता है (गीतांजलि श्री, 39)। आगे अख़बारों की भूमिका पर उपन्यास का संकेत "उसी बरस निरे तबादलों की खबर" दिखाता है कि शहर में सूचना भी निष्पक्ष नहीं रहती, वह सत्ता और समुदाय के बीच फँसकर पक्षधर हो जाती है (गीतांजलि श्री, 85)। इस प्रकार शहर एक बाहरी दृश्य नहीं, मीडिया-निर्मित सामूहिक स्मृति का हिंसक मैदान बन जाता है, जहाँ दंगा पहले भाषा में घटित होता है, फिर सड़क पर (गीतांजलि श्री, 39, 85; एजाज़ुल हक, 2022).

उदय प्रकाश की पीली छतरी वाली लड़की शहर को एक दूसरे ढंग से उद्घाटित करती है। यहाँ महानगरीय परिसर विश्वविद्यालय, छात्रावास, उपभोक्तावादी आकर्षण, देह-संस्कृति और सामाजिक-राजनीतिक

अवमूल्यन एक-दूसरे में उलझे हुए हैं। कहानी के आरम्भिक अंश में "वह आदमी बहुत ताकतवर था" (उदय प्रकाश, 11-12) केवल किसी व्यक्ति का वर्णन नहीं, बल्कि उस अदृश्य पूँजीवादी ढाँचे का संकेत है जो विचारों, नैतिकताओं और संस्थाओं को कचरे की तरह निष्प्रभावी कर देता है। इसी कथा-संसार में "यही वह आदमी है । खाऊ, तुंदियल..." जैसी आक्रामक भाषा उपभोक्तावादी संरचना के असली लाभार्थी की पहचान कराती है (उदय प्रकाश, 11)। यहाँ शहर अवसर नहीं, एक ऐसी मशीन है जो युवा संवेदना को विज्ञापन, हिंसा, वासना और असमानता की एक ही क्रूर लय में बाँध देती है। इसीलिए अजीत कुमार दास ने ठीक लिखा है कि यह कहानी प्रेम-कथा के बहाने अपने समय की बहुविध समस्याओं को उजागर करती है (दयनीय मानवीय क्षरण, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता और बेरोज़गारी सहित) (दास, 2018).

अलका सरावगी की कलिकथा : वाया बाइपास इस विमर्श में इसलिए विशेष है कि उसमें शहर और स्मृति एक-दूसरे के पर्याय हो जाते हैं। राजकमल के आधिकारिक विवरण के अनुसार यह उपन्यास "एक मारवाड़ी परिवार की कई पीढ़ियों की दास्तान" है और अंग्रेज़ों के दौर से सन् 2000 तक के इतिहास के साथ कोलकाता शहर के निर्माण-ध्वंस को पढ़ने की सुविधा देता है (अलका सरावगी, 1998). इस उपन्यास में शहर केवल वर्तमान का उपभोगवादी स्थल नहीं; वह सामुदायिक प्रवास, व्यापारिक स्मृति, औपनिवेशिक विरासत और उत्तर-उदारीकरण की अजनबीयत सभी का संचय है। इसलिए कलिकथा का कोलकाता एक ऐसा नगर बन जाता है जहाँ इतिहास सड़क के नीचे दबा नहीं रहता, वह परिवारों की बोलियों, खान-पान, स्मरणों और असुरक्षाओं में लगातार जीवित रहता है (अलका सरावगी, 1998; बरडिया, बानो, और सिसोदिया, 2024).

चित्रा मुद्गल के आवाँ में शहर स्मृति से अधिक संघर्ष का जीवित भूगोल है। बलराम ने इस उपन्यास को पढ़ते हुए बहुत सटीक टिप्पणी की कि इसकी दृष्टि "स्त्रीवादी नहीं है, वह एक श्रमजीवा की दृष्टि है" (बलराम, 2004)। इससे स्पष्ट होता है कि मुंबई यहाँ केवल महानगर नहीं, श्रमिक वर्ग, यूनियन राजनीति, स्त्री-शोषण, जाति, देह-व्यापार और पूँजी की गठजोड़ वाली एक संरचना है। नमिता पांडे का अनुभव निजी नहीं रह जाता; वह स्त्री और श्रम दोनों के महानगरीय दोहन का दस्तावेज़ बन जाता है। फिर भी इसी उपन्यास में "नीलम्मा ही मेरी ताकत" जैसी पंक्ति (चित्रा मुद्गल, 1999) यह संकेत देती है कि शहर पूर्णतः अमानवीय नहीं हो जाता; उसके भीतर सहारा, स्त्री-संघ और नैतिक पुनर्निर्माण की छोटी किन्तु महत्त्वपूर्ण जगहें भी बनती हैं। यही आवाँ की संवेदना को विशिष्ट बनाता है (चित्रा मुद्गल, 1999; बलराम, 2004).

यदि स्मृति के अधिक घरेलू, भीतरी और मनोवैज्ञानिक रूप की ओर देखें, तो गीतांजलि श्री का माई इस पूरे विमर्श को एक अंतरंग आयाम देता है। पुस्तक-परिचय में जिस "छोटे शहर की बड़ी-सी ड्योढ़ी" का उल्लेख है, वह असल में उत्तर-औपनिवेशिक मध्यवर्गीय परिवार की स्मृति-संरचना है, जहाँ स्त्री की उपस्थिति दिखती कम है, नियामक अधिक है (गीतांजलि श्री, 2004). भाई का बड़े शहर और फिर विलायत जाना, बहन का ड्योढ़ी के बाहर की दुनिया में निकलना, और इन दोनों का माई को समझने की बेचैन कोशिश ये सब मिलकर स्मृति को एक आलोचनात्मक प्रक्रिया में बदल देते हैं। यहाँ स्मृति भावुक लौटान नहीं, बल्कि यह समझने का माध्यम है कि घर, माँ, त्याग और स्त्रीत्व जैसी स्थापित धारणाएँ किन अंतःशक्तियों और मौन प्रतिरोधों से बनी हैं। इसी अर्थ में माई समकालीन शहरी चेतना की जड़ में उपस्थित घरेलू स्मृति का उपन्यास है (गीतांजलि श्री, 2004; निर्मल वर्मा, 2024).

**प्रवासी संवेदना :** इस शोध-पत्र में प्रवासी संवेदना को केवल विदेश-स्थित भारतीय अनुभव तक सीमित नहीं माना गया है। समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य में यह संवेदना गाँव से शहर, छोटे शहर से महानगर, श्रम से बाज़ार, और घर से अजनबी सामाजिक संरचना तक फैले हुए विस्थापन की भी संवेदना है। शोधगंगा में उपलब्ध प्रवासी हिंदी कहानी लेखन तथा नगरीकरण और हिंदी उपन्यास जैसे शोध-प्रबंध इस बात की पुष्टि करते हैं कि हिन्दी अध्ययन में प्रवास और शहरीकरण साथ-साथ समझे जा रहे हैं (ठाकुर, 2018; गोस्वामी, 1979). भावना ने विस्थापन पर लिखते हुए सही कहा है कि मनुष्य जब "अपनी भूमि, भाषा, रहन-सहन, संस्कृति, रिश्तों" से

अलग हो जाता है, तब निर्वासन केवल बाहरी घटना नहीं रहता; वह मानसिक और सांस्कृतिक अनुभव बन जाता है (भावना, 2021). यही परिभाषा समकालीन कथा-साहित्य की अनेक रचनाओं पर लागू होती है.

अखिलेश का निर्वासन इस प्रवासी संवेदना का अत्यंत महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इसके आधिकारिक परिचय में कहा गया है कि यह "विस्थापन का बहुस्तरीय आख्यान" है और "वह निर्वासन जो भीतर भी घटित हो रहा है, और बाहर भी" उसके केंद्र में है (अखिलेश, 2014). यही कथन इस उपन्यास की आलोचनात्मक कुंजी है। यहाँ प्रवास रेलगाड़ी, सीमा या पासपोर्ट का प्रसंग नहीं; बल्कि सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक टूटन और आत्मिक अस्थिरता का नाम है। आदमी अपनी ही दुनिया में बेदखल हो रहा है। इस कारण निर्वासन समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य में आंतरिक प्रवास का प्रतिनिधि पाठ बन जाता है। जहाँ व्यक्ति अपने समाज, अपने समय और कभी-कभी स्वयं अपने भीतर भी पराया पड़ जाता है (अखिलेश, 2014; भावना, 2021).

अलका सरावगी की कलिकथा : वाया बाइपास में प्रवासी संवेदना पीढ़ियों से गुज़रती हुई सामुदायिक स्मृति के रूप में आती है। राजस्थान से बंगाल की ओर आए मारवाड़ी समुदाय की कहानी यहाँ व्यापारिक सफलता की कथा नहीं रहती; वह भाषा, भूगोल, पहचान और स्मृति के पुनर्गठन की कथा बन जाती है। इस प्रवास में घर बदलता है, लेकिन 'अपना' और 'पराया' का प्रश्न बना रहता है। इसी प्रकार आवाँ में श्रमिकों, कामकाजी स्त्रियों और निम्न-मध्यवर्गीय परिवारों का महानगर-जीवन भी एक प्रकार का आंतरिक प्रवास है। मुंबई में रहते हुए भी वे शहर के स्वामियों की श्रेणी में नहीं आते; वे शहर को चलाते हैं, पर शहर उनके लिए घर नहीं बनता। नमिता और उसके आसपास की स्त्रियाँ महानगरीय पूँजी, वर्ग, जाति और लिंग के त्रिगुणी दबाव के बीच जीती हैं; यही दबाव प्रवासी संवेदना को स्त्रीवादी और श्रमजीवी दोनों आयाम देता है (अलका सरावगी, 1998; चित्रा मुद्गल, 1999; बलराम, 2004).

गीतांजलि श्री की माई और हमारा शहर उस बरस इस चर्चा को एक और सूक्ष्म दिशा देती हैं। माई में बड़े शहर और फिर विदेश की ओर जाने वाला भाई केवल पारिवारिक चरित्र नहीं; वह उस पीढ़ी का प्रतिनिधि है जो आधुनिक शिक्षा और गतिशीलता के साथ अपने घर की स्मृति को नए ढंग से देखने लगती है (गीतांजलि श्री, 2004). दूसरी ओर हमारा शहर उस बरस दिखाता है कि कभी-कभी प्रवासी अनुभव शहर छोड़े बिना भी बनता है। जब अपना ही नगर अचानक असुरक्षित, संदेहपूर्ण और हिंसक हो उठे। साम्प्रदायिक भय नागरिक को उसके ही शहर में विस्थापित कर देता है। इस अर्थ में प्रवासी संवेदना का एक रूप नागरिक-निर्वासन भी है, जिसमें आदमी वहीं रहकर भी अपने स्थान से उखड़ जाता है (गीतांजलि श्री, 2022; एजाज़ुल हक, 2022).

**4. परिणाम :** अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य में शहर की उपस्थिति बहुस्तरीय है। वह केवल आधुनिक आकांक्षा का प्रतीक नहीं, बल्कि राजनीतिक ध्रुवीकरण, मीडिया-नियंत्रण, बाजारवादी विस्तार, श्रमिक असुरक्षा, स्त्री-शोषण और सांस्कृतिक अजनबीयत का सम्मिलित स्थल है। इसी कारण चुनी हुई कृतियों में शहर अक्सर मनुष्य के भीतर के टूटन-संसार को भी प्रकट करता है। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह सामने आती है कि स्मृति का अर्थ इन रचनाओं में भावुक अतीत-रस नहीं, बल्कि आलोचनात्मक आत्म-स्मरण है। स्मृति ही पात्रों को अपने वर्तमान की संरचना समझने देती है; वही घर, परिवार, समुदाय, इतिहास और हिंसा की परतों को उघाड़ती है। तीसरी बात यह कि प्रवासी संवेदना अब केवल प्रवासी-भारतीय अनुभव की विषयवस्तु नहीं रही; वह आंतरिक विस्थापन, श्रम-प्रवास, स्त्री-अनुभव, सांप्रदायिक असुरक्षा और मानसिक निर्वासन तक विस्तृत हो चुकी है (राठी, 2018; भावना, 2021; दास, 2018; एजाज़ुल हक, 2022).

इन परिणामों से यह भी सिद्ध होता है कि समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य ने आधुनिकता के चमकीले मिथक के भीतर छिपे अंधेरे को पहचाना है। हमारा शहर उस बरस शहर की साम्प्रदायिक स्मृति को, पीली छतरी वाली लड़की शहर की उपभोक्तावादी संरचना को, कलिकथा : वाया बाइपास शहर और इतिहास के सामुदायिक संधिस्थल को, आवाँ श्रमजीवी महानगर को और निर्वासन मनुष्य के भीतर घटित प्रवास को एक विशिष्ट कलात्मक भाषा देते हैं। इसीलिए कहा जा सकता है कि समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य ने शहर को बाहरी दृश्य

से अधिक नैतिक, ऐतिहासिक और अनुभवात्मक प्रश्न में बदल दिया है (गीतांजलि श्री, 2022; उदय प्रकाश, 2014; अलका सरावगी, 1998; चित्रा मुद्गल, 1999; अखिलेश, 2014).

**5. निष्कर्ष :** समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य में शहर, स्मृति और प्रवासी संवेदना का संबंध अत्यंत गहरा और सर्जनात्मक है। शहर यहाँ ठोस दीवारों, सड़कों और इमारतों का मात्र समूह नहीं; वह मनुष्य की नियति में दख़ल देने वाली जीवित संरचना है। स्मृति बीते समय की राख नहीं, वर्तमान को समझने की चिंगारी है। और प्रवासी संवेदना केवल भौगोलिक दूरी का परिणाम नहीं, बल्कि उस पीड़ा, असुरक्षा, बेदखली और पुनर्रचना का नाम है जो आधुनिक जीवन के केंद्र में मौजूद है। इसीलिए इन रचनाओं में शहर जितना बाहर है, उतना ही भीतर भी; स्मृति जितनी निजी है, उतनी ही सामुदायिक; और प्रवास जितना सामाजिक है, उतना ही आत्मिक (निर्मल वर्मा, 2024; अखिलेश, 2014; राठी, 2018).

अंततः यह शोध-पत्र इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य ने भारतीय नगर-अनुभव को नई गहराई प्रदान की है। उसने शहर के भीतर छिपे इतिहास, स्मृति, बाजार, वर्ग, स्त्री-अनुभव और प्रवास के प्रश्नों को ऐसी कथा-भाषा में रूपायित किया है जो साहित्यिक भी है और दस्तावेज़ीय भी। यही इसकी सबसे बड़ी शक्ति है। समकालीन कथा-लेखन हमें याद दिलाता है कि शहर मनुष्य को जितना विस्थापित करता है, साहित्य उतना ही उसे भाषा, अर्थ और स्मृति लौटाता है (नामवर सिंह, 2016; मैनेजर पाण्डेय, 2014; विजय बहादुर सिंह, 2007).

**संदर्भ सूची :**


1. अखिलेश. निर्वासन. राजकमल प्रकाशन, 2014.
2. बरडिया, खुशी, मंतषा बानो, और सागर सिसोदिया. “अलका सरावगी के लेखन में स्मृति और समय की अवधारणा.” इनोवेशन एंड इंटीग्रेटिव रिसर्च सेंटर जर्नल, खंड 2, अंक 5, 2024, पृ. 1-9.
3. बलराम. “चित्रा मुद्गल का उपन्यास आवाँ.” अभिव्यक्ति, 2004.
4. भावना. “हिन्दी उपन्यासों का बदलता परिदृश्य : विस्थापन की पीड़ा/भावना.” अपनी माटी, 2021.
5. गोस्वामी, क्षमा. नगरीकरण और हिंदी उपन्यास (1947-1976). पीएच.डी. शोध-प्रबंध, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, 1979.
6. ज्योति. उदय प्रकाश के कथा साहित्य के आलोचनात्मक अध्ययन. पीएच.डी. शोध-प्रबंध, बनस्थली विद्यापीठ, 2015.
7. दास, अजीत कुमार. “उदय प्रकाश की कहानियों में उपभोक्तावादी संस्कृति.” अपनी माटी, वर्ष 4, अंक 26, 2018.
8. पाण्डेय, मैनेजर. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका. हरियाणा ग्रंथ अकादमी, 2014.
9. प्रकाश, उदय. पीली छतरी वाली लड़की. वाणी प्रकाशन, 2014.
10. माथ्यू, के. एम. निर्मल वर्मा के कथासाहित्य में अस्तित्ववादी दर्शन. पीएच.डी. शोध-प्रबंध, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, 1991.
11. मुद्गल, चित्रा. आवाँ. सामयिक प्रकाशन, 1999.
12. राठी, सोनिया. प्रवासी हिंदी कहानी लेखन. पीएच.डी. शोध-प्रबंध, जैन विश्वविद्यालय, 2018.
13. वर्मा, निर्मल. शब्द और स्मृति. राजकमल प्रकाशन, 2024.
14. विजय बहादुर सिंह. उपन्यास समय और संवेदना. वाणी प्रकाशन, 2007.
15. सुनील, एस. अभारतीय परिवेश के परिप्रेक्ष्य में निर्मल वर्मा का कथा साहित्य. पीएच.डी. शोध-प्रबंध, केरल विश्वविद्यालय, 2009.
16. सरावगी, अलका. कलिकथा : वाया बाइपास. राजकमल प्रकाशन, 1998.
17. सिंह, नामवर. कहानी : नयी कहानी. राजकमल प्रकाशन, 2016.
18. श्री, गीतांजलि. माई. राजकमल प्रकाशन, 2004.
19. श्री, गीतांजलि. हमारा शहर उस बरस. राजकमल पेपरबैक्स, 2022.
20. हक, एजाज़ुल. “नब्बे के बाद हिन्दी उपन्यासों में अभिव्यक्त सांप्रदायिकता का सामासिक संस्कृति पर प्रभाव.” अपनी माटी, 2022.


•